क्या परमेश्वर मुझे बताएगा कि आगे क्या करूँ?

.....मेरे लिए उसकी क्या योजना (रूपरेखा) है इसका मुझे निश्चय नहीं।

इसमें शंका नहीं कि आप मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर चुके हैं। और अब तक आपने यह भी जान लिया है कि परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए निश्चय ही एक योजना, एक निश्चित रूपरेखा है। मुझे यकीन है कि आप अपने लिए उसकी इच्छा पर चलना चाहेंगे।

परन्तु अब आप परमेश्वर की योजना के प्रति अपने सम्बन्ध के विषय में किंचित परेशान हैं। हो सकता है आपको निश्चय न हो पा रहा हो कि आप भी उसकी योजना के भाग हैं, और परमेश्वर इस विषय में आपसे बात करना चाहता है।

इस पाठ में, परमेश्वर की योजना या उसके ढाँचे में अपनी वर्तमान स्थिति व पद के विषय में खोज करेंगे। आप ऐसी अनेक सच्चाइयों के विषय में सीखेंगे जो यह बताती हैं कि क्यों आपको यह विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर आप से बात करना चाहता है। आप उन प्रावधानों और प्रतिज्ञाओं के विषय में भी सीखेंगे जो उसने आपकी अगुवाई के लिए दी हैं कि वह अपनी योजना आपके जीवन में पूरी करता है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- आप पहले से ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं।
- परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी योजना के अनुसार चलें।
- परमेश्वर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- परमेश्वर की योजना में अपने वर्तमान सम्बन्ध के प्रति निश्चयी बनना (होना)।
- परमेश्वर क्यों चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना का अनुसरण करें–इसकी व्याख्या।
- कारण बताना कि आपको क्यों यह निश्चय हो कि परमेश्वर आप पर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है।

आप पहले से ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं

विषयवस्तु 1. परमेश्वर की योजना में आपके वर्तमान सम्बन्ध का वर्णन और यह कैसे हुआ को जानना?

एक विश्वासी होने के नाते आपको यह निश्चय है कि आपने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया है और अब आप परमेश्वर की सन्तान हैं। ठीक यही निश्चय आपको होना चाहिए जिससे कि आप यह समझ सकें कि परमेश्वर अपनी इच्छा और अपनी योजना रूपी रूपरेखा आप पर प्रकट और पूरी कर रहा है। आइए, मसीह को ग्रहण करने के आपके अनुभव को दोहराएँ जो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होगा। हालाँकि आपका अनुभव अनोखा और व्यक्तिगत था फिर भी इसमें अनेक अनिवार्य बातें सम्मिलित हैं जो उन लोगों के द्वारा भी बताई गई जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया है।

आपने मसीह पर विश्वास किया

मसीह को ग्रहण करने का आपका अनुभव न तो दुर्घटनावश हुआ और न ही संयोगवश। इस महान अनुभव को पाने में आप दुर्घटना के शिकार नहीं हुए; किसी भी जन ने इस प्रकार से उद्धार नहीं पाया। फिर भी, परमेश्वर ने अपनी योजना से आपको अवगत कराया। यही नहीं, उसने आपके जीवन के लिए एक विशेष नमूने को बताया। परमेश्वर का संचारण स्वयं में आपका उद्धार नहीं है, यह तो तब मिलता है जब आप आज्ञाकारी होकर उसे ग्रहण करते हैं।

बाह्य कार्य ही अनिवार्य तत्त्व नहीं था। यह तो स्वयं का आज्ञाकारी होना था। एक सामान्य तत्त्व के विषय पवित्रशास्त्र

बताता है जो उद्धार पाने के लिए अनिवार्य है—यह है **विश्वास** करना। तब जिस आज्ञा मानने की सदा ही मांग की जाती है वह है: **हमें विश्वास करना चाहिए।**

उदाहरण के लिए ध्यान दें, पौलुस और सीलास ने फिलिप्पी के दरोगा के प्रश्न का उत्तर कैसे दिया: "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" (प्रेरितों के काम 16:30)। उद्धार पाने के लिए उनका उत्तर एकदम सरल था: "यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू उद्धार पायेगा" (प्रेरितों के काम 16:31)। दरोगा को यीशु पर विश्वास करने के लिए दिए गए निर्देश का पालन करना आवश्यक था। और उसने यीशु पर विश्वास किया और उद्धार पाया।

इसी तरह आपके जीवन में यही हुआ कि आपने आज्ञाकारी होकर यीशु को अपने हृदय में स्वीकार किया है।

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिये गये पदों को अपनी बाइबल में से पढ़िये। अब ऐसे पद वाले अक्षर पर गोला बनायें जो आपको यह बताता है कि किसी ने आज्ञाकारी होकर यीशु पर विश्वास किया।

(अ) मरकुस 15:13
(ब) लूका 1:45
(स) यूहन्ना 17:8
(द) प्रेरितों के काम 18:8

2 किस प्रकार यह सत्य है कि उद्धार आज्ञा मानने का परिणाम है?

.....

आपने वचन का पालन किया

एक मसीही बनने के लिए आपने परमेश्वर के वचन अर्थात् बाइबल की आज्ञा पालन की। बाइबल से ही तो हमने परमेश्वर के व्यक्तित्व, उसकी पवित्रता, उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में जाना और सीखा है। बाइबल ही है जो हमें बताती है कि मसीह संसार में आया, मर गया और जी उठा और वह पाप क्षमा करता है। दूसरे शब्दों में जब आपने मसीह को ग्रहण किया तो आप परमेश्वर की इच्छा के आज्ञाकारी रहे, जैसा कि बाइबल में प्रकाशित हुआ है। आपने परमेश्वर की इच्छा के विषय में पर्याप्त सीख लिया है और परमेश्वर के सन्तान बन गए हैं।

आपने पवित्र आत्मा की आज्ञा मानी

जब आप परमेश्वर के वचन द्वारा सिखाई गई सच्चाइयों का मिलान कर रहे थे और आपके मन में कई बातें उठ रही थीं तब निश्चय ही आपको अपने अन्दर दोषसिद्धि अथवा कायलित का अनुभव हुआ था। उदाहरण के लिए, आपने मसीह के मृतकों में से जी उठने के सत्य को यूँ ही नहीं सीख लिया था। आप इस बात के लिए कायल हुये थे कि मसीह जी उठा और वह आज भी जीवित है। यह कायलित आपके अन्दर पवित्र आत्मा के कार्य से उत्पन्न हुई जिसने आपको सत्य-स्वीकारने में अगुवाई की। उसके द्वारा आई कायलित को स्वीकारते हुए आपने उसकी आज्ञा मानी।

आपने वचन और पवित्र आत्मा दोनों का आज्ञा पालन किया। इसका परिणाम यह है कि आप परमेश्वर के सन्तान हैं परमेश्वर की योजना, उसका प्रारूप भविष्य में आरंभ नहीं होता परन्तु यह आप में तभी से आरंभ हो जाता है जब परमेश्वर आपको अपनी सन्तान बना लेता है। वह तो तब भी आपको अपनी योजना से अवगत कराने योग्य था जबकि आप उससे अलग हो गए थे।

उसके पुत्र (सन्तान) होने के नाते आपको यह निश्चय हो सकता है कि वह निरन्तर आपसे बात करता है।

आपके लिए कार्य

3 अपनी नोट बुक में, परमेश्वर की योजना अर्थात् उसकी रूपरेखा से आज आपके सम्बन्ध कैसे हैं और इसमें आप कैसे सम्मिलित हुए—इसे लिखें। दो या तीन वाक्यों में अपना अनुभव बताएँ।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी योजना का अनुसरण करें

विषयवस्तु 2. तीन कारण बताइए कि परमेश्वर क्यों आपसे चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना (प्रारूप) का पालन करें।

उसके सन्तान होने के नाते परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञा-पालन करें। यही वह तरीका है जिसके द्वारा हम उसकी योजना का अनुसरण करते हैं। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में अनेक बार इस माँग को किया गया (उदाहरण के लिए देखें व्यवस्थाविवरण 27:10, 1 शमूएल 12:14, तथा मत्ती 19:17)। भजन संहिता 119 का मुख्य विचार है परमेश्वर के वचन तथा व्यवस्था (नियमों) के प्रति आज्ञाकारी बने रहना तथा प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना (उदाहरण के लिए देखें पद 47, 97 तथा 167)। इसके साथ ही, मसीह भी आज्ञाकारिता को प्रेम प्रकटीकरण का महत्त्वपूर्ण तरीका मानता है (यूहन्ना 14:15)।

आपका आज्ञापालन आशीष लाता है

अनेक कारणों में से एक सर्वश्रेष्ठ कारण है कि परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम उसकी आज्ञापालन करें, क्योंकि उसकी आज्ञापालन ही हमारे जीवनों में आशीष लाती है।

इस्राएलियों ने जब वे मिस्र की दासत्व में थे बहुत दुख उठाए और तकलीफ़ें सहीं, परन्तु परमेश्वर उनको गुलामी से छुड़ा लाया। उन्हें अपनी पीढ़ी समाप्त होने तक जंगलों में घूमते-फिरना था।

आपके लिए कार्य

4 निर्गमन 15:26 में उस प्रतिज्ञा को पढ़िए जो आरंभ में परमेश्वर ने अपनी प्रजा से की थी। तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी नोट-बुक में लिखिए।

(अ) परमेश्वर ने प्रजा (लोगों) से क्या करने को कहा था?

(ब) क्या होगा यदि वे उसे करें जो परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था?

भजन संहिता 1 हमें उस पुरुष के बारे में बताता है जो "यहोवा की व्यवस्था के पालन करने से प्रसन्न रहता है" (पद 2)। यह व्यक्ति बहुत सारी आशीषें पाता है। उसका जीवन फलदायक

वृक्ष के समान होता है जिसके पत्ते मुरझाते नहीं और वह अपने जीवन में सफल होता है।

पवित्रशास्त्र में कई स्थानों पर यह वर्णन मिलता है कि जब हम परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं तो हमें आशीषें प्राप्त होती हैं। यीशु मसीह "अपने पर्वतीय उपदेश" में प्रतिज्ञाएँ करता है—"जो मन के शुद्ध हैं वे परमेश्वर को देखेंगे, जो दयावन्त हैं, जो मेल करवाने वाले हैं उनके जीवन प्रसन्न होंगे—वे आशीषों के भागीदार बनेंगे" (मत्ती 5, 7)। रोमियों 2:7 में हम पढ़ते हैं कि जो निरन्तर सच्चाई पर चलेंगे वे अनन्त जीवन पाएँगे।

आपकी आज्ञाकारिता परमेश्वर के राज्य का निर्माण करती है

परमेश्वर के राज्य का विकास बहुधा हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है। हम उस सत्य को तभी समझ पाते हैं जब हम उस प्रार्थना के शब्दों पर ध्यान करते हैं जो यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाई कि परमेश्वर से किया करें: "तेरा राज्य आए, और तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही इस पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। परमेश्वर के राज्य के लिए हमारी आज्ञाकारिता अनिवार्य है।

बाइबल में हम ऐसे समयों के विषय में पढ़ते हैं जब परमेश्वर की योजना कार्यान्वित हुई और उसके राज्य का निर्माण किया गया। हम उन दूसरे समयों के बारे में भी पढ़ते हैं जब परमेश्वर की प्रजा (उसके सन्तानों) ने आज्ञापालन नहीं की, जिससे परमेश्वर की योजना के कार्यान्वयन में बाधा पड़ी।

उदाहरण के लिए, अदन की वाटिका में, आदम ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया (उत्पत्ति 3:6)। आदम के इस कार्य से परमेश्वर की सृष्टि आशिषित हुई या शापित? उसके

फल खाने से पूर्व चहुँ ओर शान्ति विराजमान थी। यह भी नहीं लिखा है कि जानवर एक दूसरे को मार डालते थे। वहाँ कोई काँटे या झाड़ियाँ नहीं थीं। आदम के पास अवसर था कि वह अपनी संतान से शान्तिपूर्ण संसार को भर दे। परन्तु देखिये आदम की अनाज्ञाकारिता का क्या परिणाम हुआ?

आदम में से परमेश्वर का प्रतिरूप जाता रहा।वह अपनी पत्नी को डाँटने लगा और परमेश्वर से छिप गया। तब, पृथ्वी, परमेश्वर की सृष्टि, शापित हुई। इस शाप में पृथ्वी का सब कुछ सम्मिलित है–भूमि, जानवर और मनुष्य। परमेश्वर का जो राज्य सृजा (बनाया) गया था। वह अनाज्ञाकारिता से प्रभावित हुआ (उत्पत्ति 3:8-19)।

जैसा कि आदम की अनाज्ञाकारिता से राज्य बुरी तरह प्रभावित हुआ और परमेश्वर के शाप का कोपभाजन बना उसी तरह मसीह की पूर्ण आज्ञाकारिता से राज्य का भला हुआ और वह आशिषित हुआ। सच्चाई तो यह है कि सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य आदम और मसीह दोनों से प्रभावित हुआ है। उनके कार्यों के परिणाम से सब प्रभावित हुए। आदम में समस्त सृष्टि शापित हुई; मसीह में सम्पूर्ण सृष्टि ने छुटकारा पाया है।

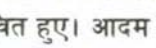

आपके लिए कार्य

5 रोमियों 5:15-21 पढ़िये। नीचे दिये गये नामों वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित उन परिणामों को लिखिये जिनके परिणामस्वरूप यह आये।

(अ) सबके लिए क्षमा उपलब्ध हुई।
(ब) मृत्यु ने शासन करना आरंभ किया।
(स) मनुष्य जाति स्वतन्त्र की गई।
(द) जीवन दिया गया।
(य) सब पर **दण्ड आज्ञा लागू हुई।**

1. मसीह की आज्ञापालन से 2) आदम की अनाज्ञाकारिता से

.....

.....

.....

अन्य लोगों ने भी परमेश्वर के राज्य को प्रभावित किया है। बाइबल में हम इब्राहीम, मूसा, यहोशू, दाऊद और एलिय्याह के विषय पढ़ते हैं। इन सब के आज्ञापालन का परमेश्वर के राज्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा था।

आपका आज्ञापालन परमेश्वर को प्रसन्न करता है

परमेश्वर की इच्छा है कि उसके सन्तान आशीष पाने और उसके राज्य की बढ़ती के लिए आज्ञाकारी बनें। व्यक्तिगत रीति से अपने बच्चों (सन्तान) की आज्ञापालन से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

मसीह ने स्वयं अपनी इच्छा पूरी करने का प्रयत्न नहीं किया परन्तु अपने पिता परमेश्वर की। उसने यह प्रमाणित किया कि जो पिता को प्रसन्नयोग्य है उसने वही किया (यूहन्ना 8:29)। उसका आज्ञापालन पिता-पुत्र के सम्बन्ध की पूर्णता को दर्शाता है।

यह पिता के लिए क्या ही आनन्ददायक था जब उसने देखा कि उसके एकलौते पुत्र ने पूरी तरह से उसकी आज्ञा-पालन की। मत्ती 3:17 और 17:5 में आप पुत्र के जीवन की आज्ञाकारिता

(आज्ञाकारी जीवन) के प्रति पिता की प्रतिक्रिया को देख सकते हैं। उसने स्वर्ग से कहा (आकाशवाणी हुई) कि वह अपने पुत्र से प्रसन्न है। आप भी, उसके पुत्र (सन्तान) होने के नाते अपने आज्ञाकारी जीवन व व्यवहार से उसे आनंन्दित और प्रसन्न कर सकते हैं।

आपके लिए कार्य

6 अपनी नोट बुक में तीन कारण लिखिये कि क्यों परमेश्वर चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना (उसके आज्ञाकारी होकर) का अनुसरण करते रहें।

परमेश्वर अपनी योजना प्रकट (प्रकाशित) करना चाहता है

विषयवस्तु 3. प्रमाण दें कि परमेश्वर आप पर अपनी योजना (रूपरेखा) प्रकट करना चाहता है।

यदि परमेश्वर हमारे पुत्र होने से पहिले हमें अपनी इच्छा बताने के योग्य है, और यदि वह अपने सन्तानों (पुत्रों) के आज्ञापालन से प्रसन्न है तो क्या वह हम पर अपनी इच्छा प्रकट न करेगा कि हम उसका पालन कर सकें?

कुछ तो परमेश्वर के पास इसलिए आते हैं कि वे उसे उसकी इच्छा प्रकट करने हेतु कायल करेंगे। वे प्रार्थना में परिश्रम करते और "परमेश्वर की इच्छा जानने" के प्रयत्न में असफल हो जाते हैं। क्या यही वह चित्र है जो बाइबल हमें दर्शाती है?

उन दृष्टांतों के विषय सोचिए जो मसीह ने मनुष्य के उत्तरदायित्व के बारे में सिखाए थे। इन्हें आप मत्ती 25:14-30

तथा लूका 12:42-48 में पढ़ सकते हैं। किसी भी मामले में उसने यह नहीं सिखाया कि मनुष्य को परमेश्वर की इच्छा अर्थात् परमेश्वर उससे क्या चाहता है कि वह करे यह जानने में परेशानी का सामना करना पड़ा हो। परमेश्वर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है! परन्तु ऐसा कौन सा सत्य है जिससे यह मालूम हो कि परमेश्वर अपनी इच्छा प्रकट करना चाहता है?

उसने आपकी अगुवाई करने की प्रतिज्ञा की है

हम जानते हैं कि परमेश्वर अपनी योजना को प्रकट करना चाहता है क्योंकि उसने हमारी अगुवाई की प्रतिज्ञा की है। वह हमें बिना अगुवाई के न छोड़ेगा।

जब मसीह पृथ्वी पर था तब शिष्यों को उसकी इच्छा जानने व सीखने में कोई कठिनाई नहीं हुई; उसने उन्हें सामान्य तौर पर बता दिया कि उसकी इच्छा क्या थी। वह जहाँ कही भी चाहता वहाँ उसने उन्हें गवाही देने—सुसमाचार सुनाने—भेज दिया। जब उसने पाँच हज़ार की भीड़ को पाँच रोटी और दो मछली से खिलाया तो उसने उन्हें पहिले से बता दिया था कि लोगों में कैसे बाँटे (लूका 9:14)।

न केवल उन्होंने मसीह द्वारा कही गई बात से सीखा, परन्तु उन्होंने उसके नमूने से भी सीखा। इसमें शक नहीं, जहाँ कहीं वह गया वे उसकी सेवकाई के अंग बने रहे। इस प्रकार से उन्होंने उसकी इच्छा को जाना और सीखा।

परन्तु मसीह जानता था कि इस प्रकार शरीर में वह सदा लों उनके साथ न रहेगा। जब वह स्वर्ग पर चढ़ गया तो उन्हें यह कैसे मालूम हुआ कि अब क्या करना है? क्या वे चकरा गए थे? उसने उन्हें अपनी इच्छा कैसे बताई?

यूहन्ना 14 से 16 में हम पढ़ते हैं कि मसीह ने अपने शिष्यों को उस समय के विषय बताकर पूरी तरह से तैयार किया जब वह उनके बीच में सशरीर न रहेगा। उसने उन्हें यह भी बताया कि वह क्या कर रहा होगा (उनके लिए स्थान तैयार कर रहा होगा)। उसने उनसे कहा कि वह उसके स्वर्ग पर जाने के बाद दुखित न हों। वास्तव में उसने उनसे यह कहा कि उसका वापस स्वर्ग पर जाना उनके लिए लाभदायक होगा। यदि वह स्वर्ग पर जाएगा तब ही पवित्र आत्मा आएगा जो परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए उनकी आँखें खोल देगा और हर पल उनकी अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:7)।

यूहन्ना 14 से 16 तीन अध्यायों में ही उन ढेर सारे आश्वासनो का वर्णन लिखा है जो मसीह ने अपने अनुयायियों को दिए थे कि वे अकेलापन महसूस न करें। अगले अभ्यास में इनमें से कुछ को आप देख सकेंगे।

आपके लिए कार्य

7 नीचे दिये गये सन्दर्भों (पदों) में यीशु ने पवित्र आत्मा के कार्य और गुण (चरित्र) का वर्णन किया है। दिए गए वर्णन को सही पद (सन्दर्भ) से मिलाकर रिक्त स्थान में उसका अंक लिखिए।

(अ) वह उनको सिखाएगा। 1) यूहन्ना 14:16
(ब) वह मसीह को महिमा देगा। 2) यूहन्ना 14:17
(स) वह उनके साथ सदा लों रहेगा। 3) यूहन्ना 14:26
(द) वह उनको वे सब बातें स्मरण 4) यूहन्ना 16:13
दिलाएगा जो मसीह ने उनसे 5) यूहन्ना 16:14
कही थीं।
(य) वह उनको आने वाली बातें
बताएगा।
(र) वह मसीह की बातें लेकर उनको
बताएगा।
(ल) वह उनमें बना (बसा) रहेगा।

इन प्रतिज्ञाओं के विषय में सोचिए और देखिए कि ये कितनी स्पष्ट हैं। परमेश्वर अपनी इच्छा प्रकट करना चाहता है।

उसने आपकी अगुवाई करने का प्रावधान किया है

तब परमेश्वर ने आपकी अगुवाई या मार्गदर्शन करने हेतु कौन सा प्रावधान (प्रबन्ध) किया है? हमने जिन प्रतिज्ञाओं का अध्ययन किया था क्या वे भविष्य के लिए हैं अथवा क्या वे पूरी हो चुकी हैं?

प्रेरितों के काम 2 में हम पढ़ते हैं कि जैसा कि मसीह ने प्रतिज्ञा की थी पवित्र आत्मा दिया गया। मसीह वापस स्वर्ग पर चला गया; उसने पवित्र आत्मा भेजे जाने हेतु पिता से कहा। और जो प्रतिज्ञा की गई थी कलीसिया ने पवित्र आत्मा पाया।

परन्तु, प्रेरितों के **काम** पुस्तक केवल मसीह की प्रतिज्ञा के पूरे होने, कि उसके अनुयायियों को पवित्र आत्मा दिया जाएगा का ही वर्णन करती है। पर इसमें वह वर्णन लिखा है जहाँ बताया गया है कि उनकी अगुवाई के लिए यह प्रावधान पर्याप्त था। वास्तव में, पवित्र आत्मा के आने के बाद से वे परमेश्वर के लिए और अधिक करने के योग्य हो गये थे जो वे पृथ्वी पर मसीह के साथ न कर पाए थे। उसका स्वर्ग पर जाना उनके लिए उत्कर्ष का कारण बना जैसा कि मसीह ने वायदा भी किया था।

अतः बाइबल हमें बताती है कि पवित्र आत्मा मसीह का ही प्रावधान था कि वह हमें परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान को समझने में मार्गदर्शन करे। परन्तु इससे भी अधिक, बाइबल हमें ऐसे विशेष उदाहरणों को बताती है कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है और उसके कार्य में हम कैसे सहयोग कर सकते हैं—इस विषय में निर्देश देता है।

पवित्र आत्मा प्रार्थना करता है

इसमें शक नहीं कि **परमेश्वर की इच्छा** जानने में मेरा अगला क़दम क्या हो? इस सम्बन्ध में आपने इस समस्या का सामना किया होगा: कैसे और किस बात के लिए मैं प्रार्थना करूँ? परमेश्वर ने इस समस्या का समाधान किया है: पवित्र आत्मा

आपके द्वारा प्रार्थना कर सकता है, और वह यह पिता की पूर्ण व सिद्ध इच्छा में करेगा। आपकी प्रार्थना पिता की इच्छा की पूर्णरूपेण अभिव्यक्ति हो सकती है (रोमियों 8:26-27)।

आपके लिए कार्य

8 रोमियों 8:26-27 पढ़ें। इन पदों के अनुसार हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर की इच्छा के निमित्त सिद्ध अभिव्यक्ति बन सकती है—क्योंकि,

(अ) पवित्र आत्मा बताता है कि हमें क्या कहना है?

(ब) पवित्र आत्मा स्वयं हमारे द्वारा प्रार्थना करता है।

(स) हम जानते हैं कि हमें क्या कहना है।

पवित्र आत्मा वरदान प्रदान करता है

पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान उसके वरदान देकर प्रदान करता है। इन वरदानों का वर्णन 1 कुरिन्थियों 12 और 14 अध्याय में किया गया है। मसीह को महिमा देने निमित्त ये वरदान कलीसिया और व्यक्ति विशेष का निर्माण और विकास करते हैं। बुद्धि या ज्ञान के वचन से हमें परमेश्वर और उसके मन को समझने हेतु विशेष अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है। यह अन्तर्दृष्टि उससे जो हम स्वाभाविक बुद्धि से सीखते हैं, ऊपर (पार) चली जाती है।

पवित्र आत्मा निवास करता है

वास्तविक रूप में पवित्र आत्मा आपके अन्दर परमेश्वर के पुत्र के समान निवास करता है। आप उसके बोलने के लिए साधन बनते हैं।

मसीह के अन्दर निवास करने वाला आत्मा ही उसे जंगल में ले गया (मत्ती 4:1)। फिलिप्पुस की पवित्र आत्मा ने अगुवाई की कि वह इथियोपिया के एक अधिकारी को साक्षी दे और समझाए (प्रेरितों के काम 8:19)। पौलुस तो एशिया को जाना चाहता था परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा योरोप जाने की अगुवाई पाई (प्रेरितों के काम 16:6-10)। इसी प्रकार से पवित्र आत्मा जो आप में निवास करता है वह परमेश्वर का प्रावधान है कि उसी की इच्छा में आपकी अगुवाई करे।

पवित्र आत्मा ने वचन दिया

एक और विशेष बात है जो कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को करने के लिए दिया कि वह हमारा मार्गदर्शन करे। यह हमें उसका **वचन** दिया जाता है, अर्थात् परमेश्वर का वचन बाइबल। अन्य पाठ में हम इस बात को सीखेंगे कि परमेश्वर हमसे बात करने के लिए किस प्रकार अपने वचन का इस्तेमाल करता है। आपके लिए यह जान लेना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर का वचन पवित्र आत्मा का उत्पादन है (2 पतरस 1:21)। **यही वह माध्यम है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमसे बातचीत करता है। यही एक आधार है जिसके द्वारा हम अन्य संदेशों की जाँच व परख करते हैं।**

आपके लिए कार्य

9 मान लीजिए आपका कोई मित्र आपसे यह प्रश्न पूछना चाहता था : मैं कैसे जानूँ कि परमेश्वर अपनी योजना मुझ पर प्रकट करना चाहता है? पहले तो आप पाठ को दोहरा लें। तब अपनी नोटबुक में निम्न सुझावों को ध्यान में रखकर उत्तर लिखें :

(अ) उस प्रतिज्ञा का वर्णन करें जो मसीह ने परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान में अगुवाई पाने के सम्बन्ध में की।

(ब) बताएँ कि मसीह की प्रतिज्ञा किस प्रकार पूरी हुई। **और**

(स) ऐसे चार तरीके बताएँ जिनके द्वारा पवित्र आत्मा परमेश्वर की योजना को हमें बताता है।

आप परमेश्वर के पुत्र हैं। क्या वह आपको बताएगा कि अब आगे क्या करना है? हाँ! आपको निश्चय हो सकता है कि परमेश्वर आपसे बात करने (बोलने) के योग्य है अर्थात् वह यह चाहता है कि आप उसकी इच्छा को जानें और यह कि उसने बातचीत करने के लिए प्रावधान कर दिया है।

अपने उत्तरों को जांच लें

5 1) के अन्तर्गत, मसीह के आज्ञाकारी होने के कारण इन बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिए: (अ) क्षमा सबके लिए उपलब्ध है; (स) मनुष्य जाति स्वतन्त्र की गई; तथा (द) जीवन प्रदान किया गया। 2) के अन्तर्गत, आदम के अनाज्ञाकारी होने के कारण : (ब) मृत्यु ने राज्य करना आरम्भ किया, तथा (य) दण्डाज्ञा सब पर लागू हुई।

1 (स) यूहन्ना 17:8
(द) प्रेरितों के काम 18:8

6 परमेश्वर आपसे यही चाहता है कि निरंतर उसकी योजना का अनुसरण करें क्योंकि आपका आज्ञाकारी होना आशीष लाएगा, उसके राज्य का निर्माण और विकास करेगा, और उसे आनन्द पहुँचाएगा (प्रसन्न करेगा)।

2 क्योंकि उद्धार उस समय आता है जब एक व्यक्ति "मसीह में विश्वास करने" के निर्देश का पालन करता है (आपका उत्तर इसी प्रकार का होना चाहिए)।

7 (अ) यूहन्ना 14:26(3)
(ब) यूहन्ना 16:14(5)
(स) यूहन्ना 14:16(1)
(द) यूहन्ना 14:26(3)
(य) यूहन्ना 16:13(4)
(र) यूहन्ना 16:14(5)
(ल) यूहन्ना 14:17(2)

3 आपका अपना उत्तर। मैं तो यह कहूँगा कि यदि आप मसीह में एक विश्वासी हैं तो आप निश्चय ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं क्योंकि आपने उसकी आज्ञापालन की है। आपने मसीह में विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानी है तथा आपने उसके वचन की साक्षी (प्रमाणों) और पवित्र आत्मा पर विश्वास किया है।

8 (ब) पवित्र आत्मा (आत्मा) स्वयं ही हमारे द्वारा प्रार्थना (विनती) करता है।

4 (अ) उसने उनसे कहा कि वे उसकी सब आज्ञाओं का पालन करें।
(ब) उसने कहा कि–मिस्र पर भेजी जाने वाली बीमारी (विपत्ति) से उनको कुछ भी हानि न होगी अर्थात् उन पर इनमें से एक भी विपत्ति न आएगी।

(आपका उत्तर इसी प्रकार का होना चाहिए।)

9 आपका उत्तर इस प्रकार का होना चाहिए :

(अ) यीशु मसीह नें कहा कि पवित्र आत्मा आएगा कि उसके अनुयायियों का मार्गदर्शन करे;

(ब) पवित्र आत्मा के भेजे (दिये) जाने की मसीह की प्रतिज्ञा पेन्तिकुस्त के दिन पूरी हुई; और (स) पवित्र आत्मा हमारे द्वारा (हममें होकर) प्रार्थना (विनती-निवेदन) करता है, हमें बुद्धि और ज्ञान के वरदान देता है, हममें निवास करता है और हमें परमेश्वर का वचन अर्थात् बाइबल को दिया है।